Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____

   (Name) _____

2. (Signature) _____

   (Name) _____

Roll No. | | | | | | | |
(In figures as per admission card)

Roll No. _____
(In words)

Test Booklet No.

J–0307

PAPER – III
PHILOSOPHY

Time : 2½ hours] **[Maximum Marks : 200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**
10. **There is NO negative marking.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ / प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. **केवल नीले / काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।**
10. **गलत उत्तर के लिए अंक नहीं काटे जायेंगे।**

PHILOSOPHY

दर्शनशास्त्र

PAPER – III

प्रश्न-पत्र – III

NOTE: **This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.**

नोट : यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड है। अभ्यर्थियों को इन में समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।

SECTION - I
खण्ड – I

Note : This section contains five (5) questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about thirty (30) words and each carries five (5) marks.

(5x5=25 marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित पाँच (5) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

(5x5=25 अंक)

"All problems of existence are essentially problems of harmony. They arise from the perception of an unsolved discord and the instinct of an undiscovered agreement or unity. To rest content with an unsolved discord is possible for the practical and more animal part of man, but impossible for his fully awakened mind, and usually even his practical parts only escape from the general necessity either by shutting out the problem or by accepting a rough, utilitarian and unillumined compromise. For essentially, all Nature seeks a harmony, life and matter in their own sphere as much as mind in the arrangement of its perceptions. ---------- The accordance of active Life with a material of form in which the condition of activity itself seems to be inertia, is one problem of opposites that Nature has solved and seeks always to solve better with greater complexities. ------- We speak of the evolution of Life in matter, the evolution of Mind in Matter; but evolution is a word which merely states the phenomenon without explaining it. For there seems to be no reason why Life should evolve out of material elements or Mind out of living form, unless we accept the vedantic solution that Life is already involved in Matter and Mind in Life because in essence Matter is a form of Veiled Life, Life a form of veiled consciousness".

- Sri. Aurobindo

''सत्ता की समस्त समस्याएं मूलत: सामंजस्य की समस्याएं है। उनकी उत्पत्ति का कारण यह है कि एक ओर तो हमें ऐसी विसंगति का प्रत्यक्ष होता है जिसका समाधान नहीं हुआ है और, दूसरी ओर हमारे भीतर एक ऐसा सहज बोध होता है जो हमें कहता है कि इस विसंगति के पीछे कोई ऐसी सहमति या एकता छिपी हुई है जो अभी तक अज्ञात है और जिसे खोज निकालना है। किसी असमाहित विसंगति से संतुष्ट बने रहना मनुष्य के व्यावहारिक और अधिक पशुभावमय अंश के लिये सम्भव है; परन्तु उसके पूर्णतया प्रबुद्ध मन के लिए असम्भव है; और प्रायेण उसके व्यावहारिक अंश भी समाधान प्राप्त करने की सर्वसामान्य आवश्यकता से केवल तभी पीछा छुड़ा सकते हैं जबकि वे समस्या की ओर से आँख मींच लें अथवा किसी स्थूल, व्यवहारोपयोगी और प्रकाशहीन समझौते को स्वीकार कर लें। कारण, मूलत: सम्पूर्ण प्रकृति सामंजस्य प्राप्त करने के लिये चेष्टा कर रही है। जिस प्रकार मन अपने प्रत्यक्षों की व्यवस्था में सामंजस्य प्राप्त करने का प्रयत्न करता है इसी प्रकार प्राप्त और जड़तत्व भी अपने-अपने क्षेत्रों में सामंजस्य प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं।

सक्रिय प्राण की ऐसे रूपवान् भौतिक द्रव्य के साथ संगति जिस भौतिक द्रव्य में स्वयं क्रिया की अवस्था ही अक्रियता (जड़ता) प्रतीत होती है, विरोधियों की एक समस्या है जिसका प्रकृति ने समाधान किया है और सर्वदा अधिक पेचीदगियों के साथ अधिक उत्तम रूप में समाधान करने का प्रयत्न कर रही है।

हम कहते हैं कि जड़त्व में प्राण और मन का विकास हुआ। परन्तु विकास ऐसा शब्द है जो कि घटना का केवल कथन मात्र करता है, उसकी व्याख्या नहीं करता। इसे समझने के लिये हमें वेदान्त का यह समाधान स्वीकार करना होगा कि पहले से ही प्राण जड़तत्त्व में और मन प्राण में अन्तर्लीन है, कारण सारात्मना जड़तत्त्व आवृत्त प्राण का रूप है और प्राण आवृत्त चेतना का रूप है, इस समाधान को स्वीकार किये बिना इस बात का कोई हेतु समझ में नहीं आयेगा कि भौतिक तत्त्वों से प्राण का विकास क्यों हो अथवा सप्राण रूपों से मन का विकास क्यों हो''।

– श्री अरविन्द

1. How are the problems of existence related to the problems of harmony ? Explain
सत्ता की समस्याएं कैसे सामंजस्य की समस्याओं से सम्बद्ध है? व्याख्या कीजिये?

2. Can man be contented with an unsolved discord ?
क्या मनुष्य असमाहित विसंगति में सन्तुष्ट बना रह सकता है?

3. How has Nature harmonised the opposition between Matter and Life ?
प्रकृति ने जड़ और प्राण के मध्य विरोध का सामंजस्य कैसे किया है?

4. Is evolution a word which merely refers to the phenomenon that has evolved ?
क्या विकास एक शब्द है जो उस घटना का निर्देश मात्र करता है जो विकसित हुआ है?

5. How does Sri. Aurobindo explain evolution ?

श्री. अरविन्द विकास की व्याख्या कैसे करते हैं?

SECTION - II

खण्ड – II

Note : This section contains fifteen (15) questions each to be answered in about thirty (30) words. Each question carries five (5) marks.

(5x15=75 marks)

नोट : इस खंड में पाँच-पाँच (5-5) अंकों के पंद्रह (15) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

(5x15=75 अंक)

6. Define Pratyakṣa after the Buddhists.

बौद्ध मतानुसार प्रत्यक्ष की परिभाषा दीजिये।

7. Explain vyāpti as niyata sāhacarya niyama.

नियत साहचर्य के रूप में व्याप्ति की व्याख्या कीजिये।

8. State the differences between Sautrāntika and Vaibhāṣika schools of Buddhism.

बौद्ध दर्शन के सौत्रान्तिक एवं वैभाषिक मतों में भेद स्पष्ट कीजिये।

9. Define śabda as āptopadeśa..

आप्तोपदेश के रूप में शब्द की परिभाषा दीजिये।

10. State akhyātivāda of Prabhākara.

प्रभाकर के अख्यातिवाद का विवरण दीजिये।

11. State and explain Guṇas of Prakṛti.

प्रकृति के गुणों का विवरण एवं व्याख्या कीजिये।

12. State and expain the laws of thought.

विचार के नियमों का विवरण एवं व्याख्या कीजिये।

13. Explain in short different types of Rna .

ऋण के विभिन्न प्रकारों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिये।

14. Give one reason of the vaiśeṣikas for admitting paramāṇu.

परमाणु की स्वीकृति के बारे में वैशेषिक विचारों की किसी एक युक्ति का विवेचन कीजिये।

15. Explain the rules of quantification.

परिमाणन के नियमों की व्याख्या कीजिये।

16. Give one reason for admitting sāṃānya as an independent category.

सामान्य को एक स्वतन्त्र पदार्थ के रूप में स्वीकार करने के लिये दी गई किसी एक युक्ति का विवेचन कीजिये।

17. Distinguish between svārthānumiti and parārthānumiti.

स्वार्थानुमिति और परार्थानुमिति में भेद स्पष्ट कीजिये।

18. Explain the vedic notion of Āśramadharma.

वैदिक आश्रमधर्म के विचार की व्याख्या कीजिये।

19. State and explain the traditional classification of propositions.

तर्कवाक्यों के परम्परागत विभाजन का विवरण एवं व्याख्या कीजिये।

20. What is the ethical significance of cardinal virtues ? Answer this question by discussing the cardinal virtues enlisted in ancient Greek ethics.

मौलिक सद्गुणों का नैतिक महत्व क्या है? प्राचीन ग्रीक नीतिशास्त्र में वर्णित मौलिक सद्गुणों का विवेचन करते हुए इस प्रश्न का उत्तर दीजिये।

SECTION - III

खण्ड – III

Note : This section contains five (5) questions from each of the electives / specialisations. The candidate has to choose only one elective / specialisation and answer all the five questions from it. Each question carries twelve (12) marks and is to be answered in about two hundred (200) words.

(12x5=60 marks)

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से पाँच (5) प्रश्न हैं। अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से पाँचो प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रत्येक प्रश्न बारह (12) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग दो सौ (200) शब्दों में अपेक्षित है।

(12x5=60 अंक)

Elective - I

विकल्प – I

21. Discuss the theory of Karma and rebirth according to Hinduism.
हिन्दू धर्म के अनुसार कर्म एवं पुनर्जन्म का विवेचन कीजिये।

22. Discuss the Buddhist conception of Nirvana.
बौद्धधर्म के निर्वाण की अवधारणा का विवेचन कीजिये।

23. Write an essay of the possibility and need of comparative Religion.
तुलनात्मक धर्म की सम्भावना एवं आवश्यकता पर एक निबन्ध लिखिये।

24. Discuss the relation between God and Man according to Christianity.
ईसाई धर्म के अनुसार ईश्वर एवं मनुष्य के सम्बन्ध का विवेचना कीजिये।

25. Discuss the salient features of religious experience.
धार्मिक अनुभूति की मुख्य विशेषताओं का विवेचन कीजिये।

OR / अथवा

Elective - II

विकल्प – II

21. Discuss after Frege the distinction between Concepts and Objects.
फ्रेगे के अनुसार 'प्रत्ययों' एवं 'पदार्थों' में भेद का विवेचन कीजिये।

22. Discuss critically Wittgenstein's Picture Theory of Meaning.
विटगेन्स्टाइन के ''शब्दार्थ के चित्र सिद्धान्त'' का आलोचनात्मक विवेचन कीजिये।

23. How are Meaning and Truth related ? Discuss
शब्दार्थ और सत्य कैसे संबंधित हैं? विवेचन कीजिये।

24. What is meant by the slogan that 'Meaning is use' ? Discuss after Wittgenstein.
''शब्द का अर्थ उसके उपयोग में है'' इस कथन का क्या तात्पर्य है? विरगेन्स्टाइन के सन्दर्भ में व्याख्या कीजिये।

25. Discuss Quine's criticism of the Analytic-Synthetic distinction.
क्वाइन के विश्लेषण-संश्लेषण के भेद की आलोचना का विवेचन कीजिये।

OR / अथवा

Elective - III

विकल्प – III

21. What is the aim of Phenomenological Reduction ? Discuss with reference to Husserl.
फिनामीना लाजिकल अपचय (रिडक्शन) की प्रक्रिया का क्या लक्ष्य है? हुसर्ल के मत के सन्दर्भ में विवेचन कीजिये।

22. Discuss the hermenentic conception of textual interpretation.
मूल ग्रन्थ के अर्थ घटन के बारे में अर्थ घटनवादी अवधारणा का विवेचन कीजिये।

23. Discuss the possibility of agreement in human understanding given the cultural plurality of the human situation.
मानवीय स्थिति के सांस्कृतिक बाहुल्य को देखते हुए मानवीय समझ में एक मत होने की संभावना का विवेचन कीजिये।

24. Discuss the idea of 'lived reality' in phenomenology, and relate it to the notion of Meaning.
''जी गई तथ्यात्मकता'' (लिव्ड रीयलिटी) के फिनामीनालॉजी के विचार का विवेचन कीजिये तथा इसका शब्दार्थ से संबंध दर्शाइये।

25. In what sense is Phenomenology aimed at disclosing 'essences' ? Discuss.
किस अर्थ में फिनामीनालाजी ''सारतत्त्व'' को अनानृत करने का लक्ष्य रखती है? विवेचन कीजिये।

OR / अथवा

Elective - IV
विकल्प – IV

21. State briefly Sankara's concept of māyā and distinguish it from that of Rāmānuja.
शंकर के माया के प्रत्यय का संक्षिप्त विवरण दीजिये तथा रामानुज के मत से इसका भेद स्पष्ट कीजिये।

22. Compare and contrast the views of Sankara and Rāmānuja regarding the relation between Brahman and the world.
ब्रह्म एवं जगत् के संबंध के बारे में शंकर एवं रामानुज के मतों का साम्य एवं वैषम्य प्रदर्शित कीजिये।

23. Explain critically anirvachaniyakhyati of the Advaitins.
अद्वैतवेदान्तियों के अनिर्वचनीय ख्याति के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिये।

24. Explain the following concepts :
(a) Karma
(b) Bhaktī
(c) Prapattī

निम्नलिखित प्रत्ययों की व्याख्या कीजिये :
(a) कर्म
(b) भक्ति
(c) प्रपत्ति

25. Explain the controversy between Sankara and Rāmānuja regarding the sameness of Pūrva-Mīmāmsā and Uttara-Mīmāmsā.
पूर्वमीमांसा एवं उत्तर मीमांसा के एकार्थक होने के बारे में शंकर एवं रामानुज के बीच विवाद की व्याख्या कीजिये।

OR / अथवा

Elective - V

विकल्प – V

21. Explain the modern relevance of Gandhian concept, of Ahimsā and Satyāgraha
गाँधी के अहिंसा और सत्याग्रह के प्रत्ययों की आधुनिक प्रासंगिकता का विवेचन कीजिये।

22. Elucidate the Relevance of Social Philosophy of Gandhi.
गाँधी के समाज दर्शन की प्रासंगिकता का सोदाहरण प्रदर्शन कीजिये।

23. Explain the significance of Sarvodaya to the Modern World.
आज के विश्व में सर्वोदय के सिद्धान्त के महत्व की व्याख्या कीजिये।

24. Discuss the concepts of Truth and Dharma in Gandhian thought.
गाँधी विचार में सत्य और धर्म के प्रत्ययों का विवेचन कीजिये।

25. Critically evaluate the Seven Social Sins in Gandhian thought.
गाँधी के विचारों में वर्णित ''सात सामाजिक पातकों'' का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।

SECTION - IV

खण्ड – IV

Note : This section consists of one essay type question of forty (40) marks to be answered in about one thousand (1000) words on any of the following topics. This question carries 40 marks.

(40x1=40 marks)

नोट : इस खंड में एक चालीस (40) अंको का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से केवल एक पर, लगभग एक हजार (1000) शब्दों में अपेक्षित है।

(40x1=40 अंक)

26. Write an essay on the Indian theories of Universal.

भारतीय दर्शन के सामान्य के बारे में दिये गये सिद्धान्तों पर एक निबन्ध लिखिये।

OR / अथवा

Write an essay on the notion of the self in Indian philosophy.

भारतीय दर्शन में आत्मा की अवधारणा पर एक निबन्ध लिखिये।

OR / अथवा

Write an essay on the controversy between Direct Realism and Representative Realism in the theory of perception.

प्रत्यक्ष के सिद्धान्त के बारे में प्रत्यक्ष वस्तुवाद एवं प्रतिनिध्यात्मक वस्तुवाद के विवाद पर एक निबन्ध लिखिये।

OR / अथवा

Write an essay on Puruṣārthas.

पुरुषार्थों पर एक निबन्ध लिखिये।

OR / अथवा

Write an essay on Gandhi's concept of Satyāgraha.

गाँधी के सत्याग्रह के प्रत्यय पर एक लेख लिखिये।

FOR OFFICE USE ONLY							
Marks Obtained							
Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words) .....

(in figures) .....

Signature & Name of the Coordinator .....

(Evaluation) Date .....